बोरखेड़ा ब्लॉक के बुद्धिजीवियों के साथ बैठक के दौरान माननीय अध्यक्ष का भाषण

———

लाडपुरा की माननीय विधायक श्रीमती कल्पना देवी जी,

देवियो और सज्जनो:

———

कोटा के लाडपुरा विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र की माननीय विधायक श्रीमती कल्पना देवी जी द्वारा आयोजित इस समारोह में आपके बीच आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।

जैसाकि आप सभी जानते हैं, हमारा यह खूबसूरत शहर करियर कोचिंग से लेकर शिक्षा और उद्योग जगत से जुड़े विभिन्न कार्यकलापों का केंद्र है।

अपने व्यावसायिक कार्यकलापों के चलते अनेक प्रतिष्ठित लोग कोटा में बस चुके हैं।

बुद्धिजीवियों को अपने विचारों और अनुभवों को साझा करने की सुविधा प्रदान करने हेतु इस तरह का मंच प्रदान करने का विचार वास्तव में एक सराहनीय कदम है।

तीन कार्यकाल के लिए राज्य विधान मंडल और उसके पश्चात दो कार्यकाल के लिए संसद में एक निर्वाचित प्रतिनिधि के रूप में जनता की सेवा करने का अवसर देने के लिए मैं कोटा की जनता का धन्यवाद करता हूँ।

लोक सभा अध्यक्ष के रूप में देश की सेवा करना बहुत गर्व और महती जिम्मेदारी से भरा दायित्व है। मैं कोटा के लोगों का बहुत आभारी हूं क्योंकि उन्होंने मुझे एक जन प्रतिनिधि के रूप में अपनी सेवाएँ देने का अवसर दिया है।

मैं श्रीमती कल्पना देवी जी का आभारी हूं कि उन्होंने मुझे इस कार्यक्रम में आमंत्रित करके मेरा सम्मान बढ़ाया। कोटा का निवासी होने पर मुझे गर्व है क्योंकि पूरे भारत से हमारे युवा, शिक्षा के एक उत्कृष्ट केंद्र, कोटा शहर में शिक्षा प्राप्त करके देश में आयोजित सबसे कठिन परीक्षाओं में सफल होते हैं।

मेरे लिए यह राष्ट्र निर्माण से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पहलू है क्योंकि इससे आज के इस प्रतिस्पर्धा भरे विश्व में युवाओं को अपनी क्षमता को पहचानने और स्वयं को कुशल और योग्य बनाने का अवसर मिलता है। लेकिन हमें इस शिक्षा प्रक्रिया को तनावमुक्त बनाने का प्रयास करना चाहिए। एक उज्ज्वल कल के लिए आशा की किरण, हमारे युवाओं को देश का भविष्य माना जाता है। इसके बावजूद, यह एक कटु सत्य है कि हमारे बहुत से युवा स्वयं को स्थापित करने के लिए बहुत संघर्ष करते हैं और उनमें से कुछ कठिन प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने के भारी दबाव से टूटकर कोई घातक कदम भी उठा लेते हैं।

हाल के दिनों में हमने कोटा में छात्रों द्वारा आत्महत्या किए जाने की दु:खद घटनाएँ देखी हैं। यह बहुत ही खतरनाक प्रवृत्ति है। इन हालातों में हमें शिक्षा के प्रति अपने दृष्टिकोण में बड़े पैमाने पर बदलाव लाने की आवशयकता है।

युवावस्था आशा, खुशी, उत्साह, मित्रता और समाज एवं परिवारों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करने का अवसर प्रदान करती है। यह प्रेम, करुणा, सहयोग और कृतज्ञता के गहन मानवीय मूल्यों को सीखने और समझने का भी समय होता है। हमें शिक्षा और प्रतिस्पर्धा को भार मानकर इस दुष्चक्र में नहीं पड़ना चाहिए। हमें अधिक अंक पाने की अंधी दौड़ को प्राथमिकता देने के बजाय अपने छात्रों की भलाई पर ध्यान देना चाहिए।

मुझे विश्वास है कि आप अपने अनुभव और विवेक से इस उद्देश्य को प्राप्त करने के माध्यम तलाश लेंगे। यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम भावी पीढ़ी को न केवल शैक्षणिक बल्कि भावनात्मक और मानसिक रूप से भी मजबूत बनाएँ। ऐसा करके ही हम वास्तव में अपने युवाओं को उनकी पूरी क्षमता का उपयोग करने और समाज में अपना सकारात्मक योगदान देने में समर्थ बना सकते हैं।

हमारे लिए बहुत गर्व की बात है कि हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा कार्यशील और जीवंत लोकतंत्र है।

इसलिए, हमारी यह जिम्मेदारी बनती है कि हम अपनी समृद्ध लोकतांत्रिक परंपराओं और मूल्यों को आगे बढ़ाएँ। इस संबंध में मैं इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि सुविचारित वाद-विवाद और खुली चर्चा करके समाज के प्रत्येक वर्ग के हितों की रक्षा करना एक परिपक्व लोकतंत्र की पहचान है।

विरोध और प्रदर्शन के नाम पर किसी भी तरह की हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। हिंसा हमारे समाज और पूरे देश की बुनियाद को कमजोर करती है। देश का सर्वोच्च कानून अर्थात् संविधान हमें अपने अधिकारों और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराता है।

हमने अब तक संविधान को अधिकारों की दृष्टि से देखा है। अब समय आ गया है कि हम इसे समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों की दृष्टि से देखें।

पिछले सप्ताह हमने संसद का विशेष सत्र आयोजित किया। जैसाकि आप सभी जानते हैं, 19 सितंबर 2023 हमारे इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हो गया है।

उस दिन, गणेश चतुर्थी के अवसर पर हमारी संसद ने नए भवन में काम करना आरंभ किया और बहुत समय से लंबित महिला आरक्षण विधेयक को सदन में पेश किया गया।

एआई तकनीक से युक्त संसद का नया भवन हमारी विरासत और संस्कृति का अद्भुत मिश्रण प्रस्तुत करता है। यह नया संसद भवन गौरवशाली प्राचीन कलाओं का जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करने के अतिरिक्त विरासत और वास्तु, कला और कौशल, संस्कृति तथा हमारे संविधान के प्रावधानों के अभूतपूर्व संगम का प्रतीक है।

यह नई संसद प्राचीन और आधुनिक काल के संगम का एक जीवंत उदाहरण पेश करती है और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की भावना को दर्शाती है।

लोक सभा और राज्य सभा में इस संविधान संशोधन विधेयक को पारित करके हमने देश की 140 करोड़ की आधी आबादी अर्थात महिलाओं की शक्ति को सम्मान दिया है।

इस विधेयक का उद्देश्य लोक सभा और सभी राज्य विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान करना और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों में वृद्धि करना है।

राजनीतिक प्रतिनिधित्व, महिला सशक्तिकरण का एक आधारभूत पहलू है और इस विधेयक के पारित होने से पंचायतों से लेकर संसद तक में हमारी आधी आबादी को समुचित प्रतिनिधित्व मिलेगा।

सरकार ने हाल ही में आयोजित जी -20 सम्मेलन में "महिलाओं के नेतृत्व में विकास" की संकल्पना को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। इस विधेयक के पारित होने से एक नए युग की शुरुआत होगी, क्योंकि इस देश में महिलाएं अब न सिर्फ नीति निर्माण में भागीदारी निभाएँगी बल्कि उन्हें लागू भी करेंगी।

भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करने के लिए "सबका साथ, सबका विकास सबका विश्वास, सबका प्रयास" के लक्ष्य के तहत सभी के सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता दी है।

यह सुनिश्चित करने के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं कि विकास की दौड़ में कोई भी पीछे न रह जाए और समाज के सभी वर्गों को विकास और समृद्धि का लाभ मिले।

जी-20 का विषय 'वसुधैव कुटुम्बकम'- एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' समाज के सभी वर्गों के समावेशी विकास के हमारे दृष्टिकोण को दर्शाता है।

हाल ही में भारत के चंद्रयान 3 ने चाँद की सतह पर उतर कर इतिहास रच दिया है। यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमारी प्रगति को दर्शाता है। आधुनिकता के इस दौर में तकनीकी रूप से इतने समृद्ध होने के बावजूद हम अपनी समृद्ध परंपराओं और मूल्यों से जुड़े हुए हैं। चंद्रयान-3 मिशन की सफलता में हमारी महिला वैज्ञानिकों अर्थात् देश की नारी शक्ति का बहुत बड़ा योगदान रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में नई सफलताओं को हासिल करने के साथ-साथ हम अपनी संस्कृति और विरासत की रक्षा और संवर्धन भी करते हैं।

चंद्रयान-3 का चंद्रमा लैंडर जिस बिंदु पर उतरा उसे 'शिव शक्ति' बिंदु के नाम से जाना जाता है क्योंकि शिव में मानवता के कल्याण का संकल्प समाहित है और शक्ति से हमें उन संकल्पों को पूरा करने का सामर्थ्य मिलता है और चंद्रमा का शिव शक्ति बिंदु भारत की इस वैज्ञानिक और दार्शनिक सोच का साक्षी है।

मुझे यह बताते हुए बहुत ख़ुशी हो रही है कि लोक सभा अध्यक्ष के रूप में अपने संक्षिप्त कार्यकाल में मैंने नियमों और विनियमों के अनुसार सदन की अध्यक्षता करते हुए यह सुनिश्चित किया है कि सदस्यों को महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी बात रखने का अवसर मिले।

मैंने सदन में बिना किसी भेदभाव के सभी राजनीतिक दलों के सदस्यों के हितों की रक्षा करने के प्रयास किये हैं। मैंने सदन के कामकाज के समय शाम 6 बजे जोकि कामकाज बंद करने का सामान्य समय होता है, से आगे बढ़ा दिया है और यह सुनिश्चित किया है कि सभी सदस्य, विशेष रूप से पहली बार चुने गए सदस्य विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त करें।

मेरा यह प्रयास रहेगा कि सदन को यथासंभव सुचारू रूप से चलाया जाए ताकि सदन की उत्पादकता बढ़े और सदन में राष्ट्रहित से जुड़े ज्यादा से ज्यादा मुद्दों का समाधान तलाशा जा सके।

मैं लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने के साथ-साथ कोटा-बूंदी की जनता के प्रतिनिधि के रूप में अपनी जिम्मेदारियों के प्रति भी सचेत रहता हूं। कोटा-बूंदी की जनता का हित सदैव मेरी प्राथमिकता रहती है।

आपने मेरे स्वागत और अभिनंदन के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया । आपसे इतना स्नेह पाकर मैं अभिभूत हूँ। इस शाम को शानदार बनाने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। मैं इस क्षेत्र के सभी बुद्धिजीवियों के सभी भावी प्रयासों की सफलता की कामना करता हूं। यहां उपस्थित सभी लोगों और इस क्षेत्र की जनता को मेरी ओर से बधाई और शुभकामनाएं ।

.....